الجزء ٩

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ

हम तुझे ज़रूर निकाल देंगे	उस की क़ौम	से	तकब्बुर करते थे (बड़े बनते थे)	वह जो कि	सरदार	बोले

يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ

हमारे दीन	में	या यह कि तुम लौट आओ	हमारी बस्ती	से	तेरे साथ	ईमान लाए	और वह जो	ऐ शुऐब (अ)

قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا

हम लौट आएं	अगर	झूटा	अल्लाह पर	अलबत्ता हम ने बुहतान बान्धा (बान्धेंगे)	88	नापसन्द करते हों	हम हों	क्या ख़ाह	उस ने कहा

فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ

उस में	कि हम लौट आएं	हमारे लिए	और नहीं है	उस से	हम को बचा लिया अल्लाह	जब	बाद	तुम्हारा दीन	में

اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर	इल्म में	हर शै	हमारा रब	अहाता कर लिया है	हमारा रब	अल्लाह	यह कि चाहे	मगर

تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ

बेहतर	और तू	हक़ के साथ	हमारी क़ौम	और दरमियान	हमारे दरमियान	फ़ैसला कर दे	हमारा रब	हम ने भरोसा किया

الْفٰتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ

तुम ने पैरवी की	अगर	उस की क़ौम	से	कुफ़्र किया	वह जिन्हों ने	सरदार	और बोले	89	फ़ैसला करने वाला

شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٩٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا

सुब्ह के वक़्त रह गए	ज़ल्ज़ला	तो उन्हें आ लिया	90	ख़सारे में होंगे	उस सूरत में	तो तुम ज़रूर	शुऐब (अ)

ع ٤ مع ١٢ عند المتقدمين

فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩١﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا

न बस्ते थे	गोया	शुऐब (अ)	झुटलाया	वह जिन्हों ने	91	औन्धे पड़े	अपने घर	में

فِيْهَا ۛ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلّٰى

फिर मुहँ फेरा	92	ख़सारा पाने वाले	वही	वह हुए	शुऐब	झुटलाया	वह जिन्हों ने	उस में वहां

عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ

तुम्हारी	और ख़ैर ख़ाही की	अपना रब	पैग़ाम (जमा)	मैं ने पहुँचा दिए तुम्हें	अलबत्ता	ऐ मेरी क़ौम	और कहा	उन से

ع ١١ ١

فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ

नबी	कोई	किसी बस्ती	में	और न भेजा हम ने	93	काफ़िर (जमा)	क़ौम	पर	ग़म खाऊँ	तो कैसे

اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٤﴾

94	आजिज़ी करें	ताकि वह	और तक्लीफ़	सख़्ती में	वहां के लोग	हम ने पकड़ा	मगर

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ

पहुँच चुकी है	और कहने लगे	वह बढ़ गए	यहां तक कि	भलाई	बुराई	जगह	हम ने बदली	फिर

اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾

95	बेख़बर थे	और वह	अचानक	पस हम ने उन्हें पकड़ा	और ख़ुशी	तक्लीफ़	हमारे बाप दादा

उस की क़ौम के वह सरदार जो बड़े बनते थे बोले ऐ शुऐब (अ)! हम ज़रूर निकाल देंगे तुझे और उन्हें जो तेरे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से या यह कि तुम हमारे दीन में लौट आओ, फ़रमाया ख़ाह हम नापसन्द करते हों (फिर भी?)। (88)

अलबत्ता हम अल्लाह पर झूटा बुहतान बान्धेंगे अगर हम उस के बाद तुम्हारे दीन में लौट आएं जबकि अल्लाह ने हमें उस से बचा लिया है और हमारा काम नहीं कि हम उस में लौट आएं मगर यह कि अल्लाह हमारा रब चाहे, हमारे रब ने अपने इल्म में हर शै का अहाता कर लिया है, हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब! फ़ैसला कर दे हमारे दरमियान और हमारी क़ौम के दरमियान हक़ के साथ और तू बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (89)

और वह सरदार बोले जिन्हों ने कुफ़्र किया उस की क़ौम के, अगर तुम ने शुऐब (अ) की पैरवी की तो उस सूरत में तुम ख़ुद ख़सारे में होगे। (90)

तो उन्हें ज़ल्ज़ले ने आ लिया, पस वह सुब्ह के वक़्त अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (91)

जिन्हों ने शुऐब (अ) को झुटलाया (वह ऐसे मिटे) गोया (कभी) बस्ते न थे वहां। जिन्हों ने शुऐब (अ) को झुटलाया वही ख़सारा पाने वाले हुए। (92)

फिर उन से उस ने मुहँ फेरा और कहा ऐ मेरी क़ौम! मैं ने तुम्हें अपने रब के पैग़ाम पहुँचा दिए और तुम्हारी ख़ैर ख़ाही कर चुका तो (अब) काफ़िर क़ौम पर कैसे ग़म खाऊँ? (93)

और हम ने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा मगर हम ने वहां के लोगों को सख़्ती में पकड़ा और तक्लीफ़ में ताकि वह आजिज़ी करें। (94)

फिर हम ने बुराई की जगह भलाई से बदली यहां तक कि वह बढ़ गए और कहने लगे तक्लीफ़ और ख़ुशी हमारे बाप दादा को पहुँच चुकी है, पस हम ने उन्हें अचानक पकड़ा और वह बेख़बर थे। (95)

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ

बरकतें	उन पर	तो अलबत्ता हम खोल देते	और परहेज़गारी करते	ईमान लाते	बस्तियों वाले	यह होता कि	और अगर

مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا

उस के नतीजे में	तो हम ने उन्हें पकड़ा	उन्हों ने झुटलाया	और लेकिन	और ज़मीन	आस्मान	से

كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ

उन पर आए	कि	बस्तियों वाले	क्या बेख़ौफ़ हैं	96	जो वह करते थे

بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ

कि	बस्तियों वाले	क्या बेख़ौफ़ हैं	97	सोए हुए हों	और वह	रातों रात	हमारा अ़ज़ाब

يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ

अल्लाह की तदबीर	क्या वह बेख़ौफ़ हो गए	98	खेल कूद रहे हों	और वह	दिन चढ़े	हमारा अ़ज़ाब	उन पर आ जाए

ع ١٢ ٦ ٢ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ

हिदायत मिली	क्या न	99	ख़सारा उठाने वाले	लोग	मगर	अल्लाह की तदबीर	बेख़ौफ़ नहीं होते

لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ

अगर हम चाहते	कि	वहां के रहने वाले	बाद	ज़मीन	वारिस हुए	वह लोग जो

اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾

100	नहीं सुनते हैं	सो वह	उन के दिल	पर	और हम मुहर लगाते हैं	उन के गुनाहों के सबब	तो हम उन पर मुसीबत डालते

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ

आए उन के पास	और अलबत्ता	उन की कुछ ख़बरें	से	तुम पर	हम बयान करते हैं	बस्तियां	यह

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ

उस से पहले	उन्हों ने झुटलाया	क्योंकि	वह ईमान लाते	सो न	निशानियां ले कर	उन के रसूल

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾ وَمَا وَجَدْنَا

हम ने पाया	और न	101	काफ़िर (जमा)	दिल (जमा)	पर	मुहर लगाता है अल्लाह	इसी तरह

لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102	नाफ़रमान-बद किर्दार	उन में अक्सर	हम ने पाए	और दरहक़ीक़त	अ़हद का पास	उन के अक्सर में

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ

और उसके सरदार	तरफ़ फ़िरऔन	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	उन के बाद	हम ने भेजा	फिर

فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾

103	फ़साद करने वाले	अन्जाम	हुआ	क्या	सो तुम देखो	उन का	तो उन्हों ने ज़ुल्म (इन्कार) किया

وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾

104	तमाम जहान	रब	से	रसूल	बेशक मैं	ऐ फ़िरऔन	मूसा	और कहा

और अगर बस्तियों वाले ईमान ले आते और परहेज़गारी इख़्तियार करते तो अलबत्ता हम उन पर बरकतें खोल देते ज़मीन और आस्मान से, लेकिन उन्हों ने झुटलाया तो हम ने उन्हें पकड़ा उस के नतीजे में जो वह करते थे। (96)

क्या अब बे ख़ौफ़ हैं बस्तियों वाले कि उन पर हमारा अ़ज़ाब रातों रात आ जाए और वह सोए हुए हों। (97)

क्या बस्तियों वाले उस से बे ख़ौफ़ हैं कि उन पर हमारा अ़ज़ाब दिन चढ़े आ जाए और वह खेल कूद रहे हों। (98)

क्या वह अल्लाह की तदबीर से बे ख़ौफ़ हो गए? सो बे ख़ौफ़ नहीं होते अल्लाह की तदबीर से मगर ख़सारा उठाने वाले। (99)

क्या उन लोगों को हिदायत न मिली जो ज़मीन के वारिस हुए वहां के रहने वालों के बाद, अगर हम चाहते तो उन के गुनाहों के सबब उन पर मुसीबत डालते, और हम उन के दिलों पर मुहर लगाते हैं, सो वह सुनते नहीं। (100)

यह बस्तियां हैं जिन की ख़बरें हम तुम पर बयान करते हैं, और अलबत्ता उन के पास आए उन के रसूल निशानियां ले कर, सो वह ईमान न लाए क्योंकि उस से पहले उन्हों ने झुटलाया था, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगाता है। (101)

और हम ने उन के अक्सर में अ़हद का कोई पास न पाया और दरहक़ीक़त हम ने उन में अक्सर नाफ़रमान बद किर्दार पाए। (102)

फिर हम ने उन के बाद मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा फ़िरऔन की तरफ़ और उस के सरदारों की तरफ़ तो उन्हों ने उन (निशानियों का) इन्कार किया, सो तुम देखो फ़साद करने वालों का अन्जाम क्या हुआ? (103)

और कहा मूसा (अ) ने, ऐ फ़िरऔन! बेशक मैं तमाम जहानों के रब की तरफ़ से रसूल हूँ। (104)

حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ

तहक़ीक़ तुम्हारे पास लाया हूँ निशानियां	मगर हक़	अल्लाह पर	मैं न कहूँ	कि	पर	शायां

مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٠٥﴾ قَالَ اِنْ كُنْتَ

तू	अगर	बोला	105	बनी इस्राईल	मेरे साथ	पस भेज दे	तुम्हारा रब	से

جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ

अपना असा	पस उस ने डाला	106	सच्चे	से	अगर तू है	तो वह ले आ	लाया है कोई निशानी

فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ

नूरानी	पस नागाह वह	अपना हाथ	और निकाला	107	सरीह (साफ़)	अज़दहा	पस वह अचानक

١٣ ع ٩ ٣ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ

यह जादूगर	बेशक	फ़िरऔन	क़ौम	से	सरदार	बोले	108	नाज़िरीन के लिए

عَلِيْمٌ ﴿١٠٩﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿١١٠﴾

110	कहते हो	तो अब क्या	तुम्हारी सरज़मीन	से	तुम्हें निकाल दे	कि	चाहता है	109	इल्म वाला (माहिर)

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿١١١﴾ يَاْتُوْكَ

तेरे पास ले आएं	111	इकटठा करने वाले (नक़ीब)	शहरों में	और भेज	और उस का भाई	रोक ले	वह बोले

بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿١١٢﴾ وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا

कोई अजर (इन्आम)	हमारे लिए	यक़ीनन	वह बोले	फ़िरऔन	जादूगर (जमा)	और आए	112	इल्म वाला (माहिर)	जादूगर	हर

اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٣﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿١١٤﴾

114	मुक़र्रबीन	अलबत्ता-से	और तुम बेशक	हाँ	उस ने कहा	113	ग़ालिब (जमा)	हम	हुए	अगर

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿١١٥﴾

115	डालने वाले	हम	हों	यह कि	और या (वरना)	तू डाल	यह कि	या	ऐ मूसा (अ)	वह बोले

قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ

और उन्हें डराया	लोग	आँखें	सिहर कर दिया	उन्हों ने डाला	पस जब	तुम डालो	कहा

وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ﴿١١٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ

अपना असा	डालो	कि	मूसा (अ)	तरफ़	और हम ने वहि भेजी	116	बड़ा	और वह लाए जादू

فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿١١٧﴾ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا

जो	और बातिल हो गया	हक़	पस साबित हो गया	117	जो उन्हों ने ढकोस्ला बनाया था	निगलने लगा	वह	तो नागाह

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٨﴾ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ﴿١١٩﴾

119	ज़लील	और लौटे	वहीं	पस मग़लूब हो गए	118	वह करते थे

وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿١٢٠﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢١﴾

121	तमाम जहान (जमा)	रब पर	हम ईमान लाए	वह बोले	120	सिज्दा करने वाले	जादूगर	और गिर गए

शायां है कि मैं न कहूँ अल्लाह पर मगर हक़, तहक़ीक़ मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानियां लाया हूँ, पस मेरे साथ बनी इस्राईल को भेज दे। (105)

बोला अगर तू कोई निशानी लाया है तो वह ले आ, अगर तू सच्चों में से है। (106)

पस उस (मूसा अ) ने डाला अपना असा, पस अचानक वह साफ़ अज़दहा हो गया। (107)

और अपना हाथ (गरेबान) से निकाला तो नागाह वह नाज़िरीन के लिए नूरानी हो गया। (108)

फ़िरऔन की क़ौम के सरदार बोले बेशक यह तो माहिर जादूगर है। (109)

चाहता है कि तुम्हें निकाल दे तुम्हारी सरज़मीन से, तो अब क्या कहते हो (क्या मश्वरा है)? (110)

वह बोले उस को और उस के भाई को रोक ले और शहरों में भेज दे नक़ीब। (111)

तेरे पास हर माहिर जादूगर ले आएं। (112)

और जादूगर फ़िरऔन के पास आए, वह बोले यक़ीनन हमारे लिए कोई इन्आम हो गा अगर हम ग़ालिब हुए। (113)

उस ने कहा हाँ! तुम बेशक (मेरे) मुक़र्रबीन में से होगे। (114)

वह बोले, ऐ मूसा (अ)! या तू डाल वरना हम डालने वाले हैं। (115)

(मूसा अ) ने कहा तुम डालो, पस जब उन्हों ने डाला लोगों की आँखों पर सिहर कर दिया और उन्हें डराया और वह बड़ा जादू लाए थे। (116)

और हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी कि अपना असा डालो, नागाह वह निगलने लगा जो ढकोस्ला उन्हों ने बनाया था। (117)

पस हक़ साबित हो गया और वह जो करते थे बातिल हो गया। (118)

पस वह वहीं मग़लूब हो गए और लौटे ज़लील हो कर। (119)

और जादूगर सिज्दे में गिर गए, (120)

वह बोले कि हम तमाम जहानों के रब पर ईमान ले आए। (121)

(यानी) मूसा (अ) और हारून (अ) के रब पर। (122)

फ़िरऔन बोला क्या तुम उस पर ईमान ले आए इस से क़ब्ल कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ? बेशक यह एक चाल है कि शहर में तुम ने चली है ताकि उस के रहने वालों को यहां से निकाल दो, तुम जल्द (उस का नतीजा) मालूम कर लोगे। (123)

मैं ज़रूर काट डालूँगा तुम्हारे (एक तरफ़ के) हाथ और दूसरी तरफ़ के पाऊँ, फिर मैं तुम सब को ज़रूर सूली दूँगा। (124)

वह बोले बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं। (125)

और तुझ को हम से दुश्मनी नहीं मगर सिर्फ़ यह कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वह हमारे पास आ गईं, ऐ हमारे रब! हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें मौत दे (उस हाल में कि हम) मुसलमान हों। (126)

और सरदार बोले फ़िरऔन की क़ौम के, क्या तू मूसा (अ) और उस की क़ौम को छोड़ रहा है कि वह ज़मीन में फ़साद करें और वह (मूसा अ) तुझे छोड़ दे और तेरे माबूदों को, उस ने कहा हम अनक़रीब उन के बेटों को क़त्ल कर डालेंगे और बेटियों को ज़िन्दा छोड़ देंगे, और हम उन पर ज़ोर आवर हैं। (127)

मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहा कि तुम अल्लाह से मदद मांगो और सब्र करो, बेशक ज़मीन अल्लाह की है, वह अपने बन्दों में से जिस को चाहता है उस का वारिस बना देता है, और अन्जाम कार परहेज़गारों के लिए है। (128)

वह बोले हम अज़ीयत दिए गए इस से क़ब्ल कि आप हम में आए और उस के बाद कि आप हम में आए, (मूसा (अ) ने) कहा क़रीब है तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा (नाइब) बना दे, फिर देखेगा तुम कैसे काम करते हो। (129)

और अलबत्ता हम ने पकड़ा फ़िरऔन वालों को क़हतों में और फलों के नुक़सान में ताकि वह नसीहत पकड़ें। (130)

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ

रब	मूसा (अ)	और हारून	122	बोला	फ़िरऔन	क्या तुम ईमान लाए	उस पर	पहले	कि

اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ

मैं इजाज़त दूँ तुम्हें	बेशक	यह	एक चाल है	जो तुम ने चली	में	शहर	ताकि निकाल दो	यहां से

اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ

उस के रहने वाले	पस जल्द	तुम मालूम कर लोगे	123	मैं ज़रूर काट डालूँगा	तुम्हारे हाथ	और तुम्हारे पाऊँ

مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا

से	दूसरी तरफ़	फिर	मैं तुम्हें ज़रूर सूली दूँगा	सब को	124	वह बोले	बेशक हम	तरफ़	अपना रब

مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا

लौटने वाले	125	और नहीं	तुझ को दुश्मनी	हम से	मगर	यह कि	हम ईमान लाए	निशानियां	अपना रब	जब

جَآءَتْنَا ۭ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَقَالَ ١٤ ع ١٨ ٤

वह हमारे पास आएं	हमारा रब	दहाने खोल दे	हम पर	सब्र	और हमें मौत दे	मुसलमान (जमा)	126	और बोले

الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا

सरदार	से (के)	क़ौम	फ़िरऔन	क्या तू छोड़ रहा है	मूसा	और उस की क़ौम	ताकि वह फ़साद करें

فِى الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ۭ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ

में	ज़मीन	और वह छोड़ दे तुझे	और तेरे माबूद	उस ने कहा	हम अनक़रीब क़त्ल कर देंगे	उन के बेटे

وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ مُوْسٰى

और ज़िन्दा छोड़ देंगे	उन की औरतें (बेटियां)	और हम	उन पर	ज़ोर आवर (जमा)	127	कहा	मूसा (अ)

لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۣ

अपनी क़ौम से	तुम मदद मांगो	अल्लाह से	और सब्र करो	बेशक	ज़मीन	अल्लाह की

يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾

वह उस का वारिस बनाता है	जिस	चाहता है	से	अपने बन्दे	और अन्जाम कार	परहेज़गारों के लिए	128

قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۭ

वह बोले	हम अज़ीयत दिए गए	से	क़ब्ल	कि	आप (अ) हम में आते	और बाद	आप आए हम में

قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى

उस ने कहा	क़रीब है	तुम्हारा रब	कि	हलाक कर दे	तुम्हारा दुश्मन	और तुम्हें ख़लीफ़ा बना दे	में

الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنَآ ١٥ ع ٣ ٥

ज़मीन	फिर देखेगा	कैसे	तुम काम करते हो	129	और अलबत्ता	हम ने पकड़ा

اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾

फ़िरऔन वाले	क़हतों में	और नुक़सान	से (में)	फल (जमा)	ताकि वह	नसीहत पकड़ें	130

فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ

कोई बुराई	पहुँचती	और अगर	यह	हमारे लिए	वह कहने लगे	भलाई	आई उन के पास	फिर जब

يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۭ اَلَآ اِنَّمَا طٰۗىِٕرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ

अल्लाह के पास	उन की बदनसीबी	इस के सिवा नहीं	याद रखो	और जो उन के साथ (साथी)	मूसा से	बदशगूनी लेते

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ١٣١ وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ

हम पर तू लाएगा	जो कुछ	और वह कहने लगे	131	नहीं जानते	उन के अक्सर	और लेकिन

مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ١٣٢ فَاَرْسَلْنَا

फिर हम ने भेजे	132	ईमान लाने वाले	तुझ पर	हम	तो नहीं	उस से	कि हम पर जादू करे	कैसी भी निशानी

عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ

निशानियां	और खून	और मेंडक	और जुएं-चच्ड़ी	और टिड्डी	तूफ़ान	उन पर

مُّفَصَّلٰتٍ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ١٣٣ وَلَمَّا

और जब	133	मुजरिम (जमा)	एक क़ौम (लोग)	और वह थे	तो उन्हों ने तकब्बुर किया	जुदा जुदा

وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ

अ़हद	सबब-जो	अपना रब	हमारे लिए	दुआ कर	ऐ मूसा	कहने लगे	अ़ज़ाब	उन पर	वाक़े हुआ

عِنْدَكَ ۚ لَىِٕنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ

और हम ज़रूर भेज देंगे	तुझ पर	हम ज़रूर ईमान लाएंगे	अ़ज़ाब	हम से	तू ने खोल दिया (उठा लिया)	अगर	तेरे पास

مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ١٣٤ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ

अ़ज़ाब	उन से	हम ने खोल दिया (उठा लिया)	फिर जब	134	बनी इस्राईल	तेरे साथ

اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ١٣٥ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ

उन से	फिर हम ने इन्तिक़ाम लिया	135	अ़हद तोड़ देते	वह	उसी वक़्त	उस तक पहुँचना था	उन्हें	एक मुद्दत तक

فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا

उन से	और वह थे	हमारी आयतों को	झुटलाया	क्योंकि उन्हों	दर्या में	पस उन्हें ग़र्क़ कर दिया

غٰفِلِيْنَ ١٣٦ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ

कमज़ोर समझे जाते	थे	वह जो	क़ौम	और हम ने वारिस किया	136	ग़ाफ़िल (जमा)

مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ

वादा	और पूरा हो गया	उस में	हम ने बरकत रखी	वह जिस	और उस के मग़रिब (जमा)	ज़मीन	मशरिक़ (जमा)

رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰي بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ بِمَا صَبَرُوْا ۭ وَدَمَّرْنَا

और हम ने बरबाद कर दिया	उन्हों ने सब्र किया	बदले में	बनी इस्राईल	पर	अच्छा	तेरा रब

مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ١٣٧

137	वह ऊँचा फैलाते थे	और जो	और उस की क़ौम	फ़िरऔन	बनाते थे (बनाया था)	जो

जब उन के पास आई भलाई तो वह कहने लगे यह हमारे लिए है, और कोई बुराई पहुँचती तो मूसा (अ) और उन के साथियों से बदशगूनी (बद नसीबी) लेते, याद रखो! इस के सिवा नहीं कि उन की बदनसीबी अल्लाह के पास है, लेकिन उन के अक्सर नहीं जानते। (131)

और वह कहने लगे तू हम पर कैसी भी निशानी लाएगा कि उस से हम पर जादू करे तो (भी) हम तुझ पर ईमान लाने वाले नहीं। (132)

फिर हम ने उन पर भेजे तूफ़ान, और टिड्डी, और जुएं, और मेंडक, और खून, जुदा जुदा निशानीयां, तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वह मुजरिम क़ौम के लोग थे। (133)

और जब उन पर अ़ज़ाब वाक़े हुआ तो कहने लगे कि ऐ मूसा (अ)ः तू हमारे लिए दुआ कर अपने रब से (अल्लाह के) उस अ़हद के सबब जो तेरे पास है, अगर तू ने हम से अ़ज़ाब उठा लिया तो हम ज़रूर तुझ पर ईमान ले आएंगे और बनी इस्राईल को तेरे साथ ज़रूर भेज देंगे। (134)

फिर जब हम ने उन से अ़ज़ाब उठा लिया एक मुद्दत तक (जिसे आख़िर कार) उन्हें पहुँचना था, उसी वक़्त वह अ़हद तोड़ देते। (135)

फिर हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया और उन्हें दर्या में ग़र्क़ कर दिया क्योंकि उन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह उन से ग़ाफ़िल थे। (136)

और हम ने उस क़ौम को वारिस कर दिया जो कमज़ोर समझे जाते थे, (उस) ज़मीन के मशरिक़ ओ मग़रिब का जिस में हम ने बरकत रखी है (सर ज़मीने फ़लसतीन ओ शाम), और बनी इस्राईल पर तेरे रब का वादा पूरा हो गया उस के बदले में कि उन्हों ने सब्र किया, और हम ने बरबाद कर दिया जो फ़िरऔन और उस की क़ौम ने बनाया था और जो वह ऊँचा फैलाते थे (उन के बुलन्द ओ बाला महल्लात)। (137)

ع

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ

जमे बैठे थे	एक क़ौम	पर (पास)	पस वह आए	बहरे (कुलज़ुम)	बनी इस्राईल को	और हम ने पार उतारा

عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ

उन के लिए	जैसे	बुत	हमारे लिए	बना दे	ऐ मूसा (अ)	वह बोले	अपने	सनम (जमा) बुत	पर

اٰلِهَةٌ ۭ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ١٣٨ اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ

वह	जो	तबाह होने वाली है	यह लोग	बेशक	138	जहल करते हो	तुम लोग	बेशक तुम	उस ने कहा	माबूद (जमा) बुत

فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ١٣٩ قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ

तलाश करूँ तुम्हारे लिए	क्या अल्लाह के सिवा	उस ने कहा	139	वह कर रहे हैं	जो	और बातिल	उस में

اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ١٤٠ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ

से	हम ने तुम्हें नजात दी	और जब	140	सारे जहान	पर	फ़ज़ीलत दी तुम्हें	हालांकि वह	कोई माबूद

اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْۗءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ

तुम्हारे बेटे	मार डालते थे	अज़ाब	बुरा	तुम्हें तक्लीफ़ देते थे	फ़िरऔन वाले

ع ١٦ ١٢ ٦

وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَاۗءَكُمْ ۭ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَاۗءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ١٤١ ع

141	बड़ा-बड़ी	तुम्हारा रब	से	आज़माइश	और उस में तुम्हारे लिए	तुम्हारी औरतें (बेटियां)	और जीता छोड़ देते थे

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ

तो पूरी हुई	दस (10) से	और उस को हम ने पूरा किया	रात	तीस (30)	मूसा (अ)	और हम ने वादा किया

مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ

अपने भाई से	मूसा	और कहा	रात	चालीस (40)	उस का रब	मुद्दत

هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ

रास्ता	और न पैरवी करना	और इस्लाह करना	मेरी क़ौम में	मेरा ख़लीफ़ा (नाइब) रह	हारून (अ)

الْمُفْسِدِيْنَ ١٤٢ وَلَمَّا جَاۗءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ

उस ने कहा	अपना रब	और उस ने कलाम किया	हमारी वादा गाह पर	मूसा (अ)	आया	और जब	142	मुफ़्सिद (जमा)

رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ۭ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى

तरफ़	तू देख	और लेकिन (अलबत्ता)	तू मुझे हरगिज़ न देखेगा	उस ने कहा	तेरी तरफ़	मैं देखूँ	मुझे दिखा	ऐ मेरे रब

الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى

तजल्ली की	पस जब	तू मुझे देख लेगा	तो तभी	अपनी जगह	वह ठहरा रहा	पस अगर	पहाड़

رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ

होश आया	फिर जब	बेहोश	मूसा (अ)	और गिरा	रेज़ा रेज़ा	उसको कर दिया	पहाड़ की तरफ़	उस का रब

قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ١٤٣

143	ईमान लाने वाले	सब से पहला	और मैं	तेरी तरफ़	मैं ने तौबा की	तू पाक है	उस ने कहा

और हम ने उतारा बनी इस्राईल को बहरे (कुलज़ुम) के पार, पस वह एक ऐसी क़ौम के पास आए जो अपने बुतों (की पूजा) पर जमे बैठे थे, वह बोले ऐ मूसा (अ)! हमारे लिए ऐसे बुत बना दे जैसे उन के हैं, (मूसा अ) ने कहा बेशक तुम लोग जहल (नादानी) करते हो। (138)

बेशक यह लोग जिस (बुत परस्ती) में लगे हुए हैं वह तबाह होने वाली है और बातिल है वह जो यह कर रहे हैं। (139)

मूसा (अ) ने कहाः किया अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई और माबूद तलाश करूँ? हालांकि उस ने तुम्हें सारे जहान पर फ़ज़ीलत दी। (140)

और (याद करो) जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन वालों से नजात दी, वह तुम्हें बुरे अ़ज़ाब से तक्लीफ़ देते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी बेटियों को जीता छोड़ देते थे। और उस में तुम्हारे लिए तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी। (141)

और हम ने मूसा (अ) से वादा किया तीस (30) रातों का और उस को दस (10) (और बढ़ा कर) पूरा किया तो उस के रब की मुद्दत चालीस (40) रात पूरी हुई, और मूसा (अ) ने अपने भाई हारून (अ) से कहा मेरे नाइब रहो मेरी क़ौम में और इस्लाह करना और मुफ़्सिदों के रास्ते की पैरवी न करना। (142)

और जब मूसा (अ) आए हमारी वादा गाह पर और अपने रब से कलाम किया, मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे दिखा कि मैं तुझे देखूँ, अल्लाह ने कहा तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा, अलबत्ता पहाड़ की तरफ़ देख, पस अगर वह अपनी जगह ठहरा रहा तो तभी मुझे देख लेगा, पस जब उस के रब ने तजल्ली की पहाड़ की तरफ़ (तो) उस को रेज़ा रेज़ा कर दिया और मूसा (अ) बेहोश हो कर गिर पड़े, फिर जब होश आया तो उस ने कहा, तू पाक है, मैं ने तौबा की तेरी तरफ़ और मैं ईमान लाने वालों में सब से पहला हूँ। (143)

قَالَ يٰمُوْسٰۤى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ

अपने पैग़ामात से	लोग	पर	मैं ने तुझे चुन लिया	बेशक मैं	ऐ मूसा	कहा

وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَاۤ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾ وَكَتَبْنَا

और हम ने लिख दी	144	शुक्र गुज़ार (जमा)	से	और रहो	जो मैं ने तुझे दिया	पस पकड़ ले	और अपने कलाम से

لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ

हर चीज़ की	और तफ़सील	नसीहत	हर चीज़	से	तख़्तियां	में	उस के लिए

فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۗ

उस की अच्छी बातें	वह पकड़ें (इख़्तियार करें)	और हुक्म दे अपनी क़ौम	क़ुव्वत से	पस तू उसे पकड़ ले

سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٤٥﴾ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	अपनी आयात	से	मैं अ़नक़रीब फेर दूँगा	145	नाफ़रमानों का घर	अ़नक़रीब मैं तुम्हें दिखाऊंगा

يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ

हर निशानी	वह देख लें	और अगर	नाहक़	ज़मीन में	तकब्बुर करते हैं

لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ

रास्ता	न पकड़ें (इख़्तियार करें)	हिदायत	रास्ता	देख लें	और अगर	न ईमान लाएं उस पर

وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَىِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

इस लिए कि उन्हों ने	यह	रास्ता	इख़्तियार कर लें उसे	गुमराही	रास्ता	देख लें	और अगर

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٤٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

झुटलाया	और जो लोग	146	ग़ाफ़िल (जमा)	उस से	और थे	हमारी आयात	झुटलाया

بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۗ هَلْ يُجْزَوْنَ

वह बदला पाएंगे	क्या	उन के अ़मल	ज़ाया हो गए	आख़िरत	और मुलाक़ात	हमारी आयात को

ع ١٧ ٦ ٨

اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٧﴾ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْ ۢ بَعْدِهٖ

उस के बाद	मूसा	क़ौम	और बनाया	147	वह करते थे	जो	मगर

مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ۗ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ

नहीं कलाम करता उन से	कि वह	क्या न देखा उन्हों ने	गाय की आवाज़	उस में	एक धड़	एक बछड़ा	अपने ज़ेवर	से

وقف لازم

وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾ وَلَمَّا

और जब	148	और वह ज़ालिम थे	उन्हों ने बना लिया	रास्ता	और नहीं दिखाता उन्हें

سُقِطَ فِىْۤ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ

अगर	वह कहने लगे	तहक़ीक़ गुमराह हो गए	कि वह	और देखा उन्हों ने	गिरे अपने हाथों में (नादिम हुए)

لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾

149	ख़सारा पाने वाले	से	ज़रूर हो जाएंगे हम	और (न) बख़्श दिया	हमारा रब	रहम न किया हम पर

अल्लाह ने कहा ऐ मूसा (अ)! बेशक मैं ने तुझे लोगों पर चुन लिया अपने पैग़ामों और अपने कलाम से, पस जो मैं ने तुझे दिया है (क़ुव्वत से) पकड़ ले और शुक्र गुज़ारों में से रहो। (144)

और हम ने उस के लिए लिख दी तख़्तियों में हर चीज़ की नसीहत, हर चीज़ की तफ़सील, पस तू उसे क़ुव्वत से पकड़ ले और हुक्म दे अपनी क़ौम को कि वह उस के बेहतर मफ़हूम की पैरवी करें, अ़नक़रीब मैं तुझे नाफ़रमानों का घर (अन्जाम) दिखाऊंगा। (145)

मैं अ़नक़रीब फेर दूँगा उन लोगों को अपनी आयतों से जो ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते हैं, और अगर वह हर निशानी देख लें (फिर भी) उस पर ईमान न लाएं, और अगर हिदायत का रास्ता देख लें तो भी उस रास्ते को इख़्तियार न करें, और अगर देख लें गुमराही का रास्ता तो इख़्तियार कर लें, यह इस लिए कि उन्हों ने हमारी आयात को झुटलाया और वह उस से ग़ाफ़िल थे। (146)

और जिन लोगों ने झुटलाया हमारी आयात को और आख़िरत की मुलाक़ात को, उन के अ़मल ज़ाया हो गए, वह क्या बदला पाएंगे मगर (वही) जो वह करते थे। (147)

और मूसा (अ) की क़ौम ने उस के बाद बनाया अपने ज़ेवर से एक बछड़ा, (महज़) एक धड़ जिस में गाय की आवाज़ थी, क्या उन्हों ने न देखा कि न वह उन से कलाम करता है न उन्हें दिखाता है रास्ता? उन्हों ने उसे (माबूद) बना लिया और वह ज़ालिम थे। (148)

और जब वह नादिम हुए और उन्हों ने देखा कि वह गुमराह हो गए तो कहने लगे अगर हमारे रब ने हम पर रहम न किया और हमें न बख़्श दिया तो हम ज़रूर हो जाएंगे ख़सारा पाने वालों में से। (149)

وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا

क्या बुरी	उस ने कहा	रंजीदा	गुस्से में भरा हुआ	अपनी क़ौम की तरफ़	मूसा (अ)	लौटा	और जब

خَلَفْتُمُوْنِىْ مِنْۢ بَعْدِىْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ

तख़्तियाँ	डाल दें	अपना परवरदिगार	हुक्म	क्या जल्दी की तुम ने	मेरे बाद	तुम ने मेरी जांनशीनी की

وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ۭ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ

क़ौम-लोग	बेशक	ऐ मेरे माँ जाए	वह बोला	अपनी तरफ़	उसे खींचने लगा	अपना भाई	सर	और पकड़ा

اسْتَضْعَفُوْنِىْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِىْ ۡ فَلَا تُشْمِتْ بِىَ الْاَعْدَاۗءَ

दुश्मन (जमा)	मुझ पर	पस ख़ुश न कर	मुझे क़त्ल कर डालें	और क़रीब थे	कमज़ोर समझा मुझे

وَلَا تَجْعَلْنِىْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ١٥٠ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِىْ وَلِاَخِىْ

और मेरा भाई	मुझे बख़्श दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	150	ज़ालिम (जमा)	क़ौम (लोग)	साथ	और मुझे न बना (शामिल न कर)

وَاَدْخِلْنَا فِىْ رَحْمَتِكَ ۡ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ١٥١ ع اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا ١٨ ٨

उन्हों ने बना लिया	वह लोग जो	बेशक	151	सब से ज़ियादा रहम करने वाला	और तू	अपनी रहमत में	और हमें दाख़िल कर

الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ

दुनिया	ज़िन्दगी	में	और ज़िल्लत	उन के रब का	ग़ज़ब	अनक़रीब उन्हें पहुँचेगा	बछड़ा

وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُفْتَرِيْنَ ١٥٢ وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا

तौबा की	फिर	बुरे	अमल किए	और जिन लोगों ने	152	बुहतान बान्धने वाले	हम सज़ा देते हैं	और इसी तरह

مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ١٥٣

153	मेहरबान	बख़्शने वाला	उस के बाद	तुम्हारा रब	बेशक	और ईमान लाए	उस के बाद

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۖ وَفِىْ نُسْخَتِهَا

और उन की तहरीर में	तख़्तियाँ	लिया-उठा लिया	गुस्सा	मूसा (अ)	से-का	ठहरा (फ़रू हुआ)	और जब

هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ١٥٤ وَاخْتَارَ مُوْسٰى

मूसा	और चुन लिए	154	डरते हैं	अपने रब से	वह	उन लोगों के लिए जो	और रहमत	हिदायत

قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	उस ने कहा	ज़लज़ला	उन्हें पकड़ा (आ लिया)	फिर जब	हमारे वादे के वक़्त के लिए	मर्द	सत्तर (70)	अपनी क़ौम

لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّاىَ ۭ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاۗءُ

बेवकूफ़ (जमा)	किया	उस पर जो	क्या तू हमें हलाक करेगा	और मुझे	इस से पहले	इन्हें हलाक कर देता	अगर तू चाहता

مِنَّا ۚ اِنْ هِىَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ۭ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَاۗءُ وَتَهْدِىْ مَنْ

जो-जिस	और तू हिदायत दे	तू चाहे	जिस	उस से	तू गुमराह करे	तेरी आज़माइश	मगर	यह नहीं	हम में से

تَشَاۗءُ ۭ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ١٥٥

155	बख़्शने वाला	बेहतरीन	और तू	और हम पर रहम फ़रमा	सो हमें बख़्श दे	हमारा कारसाज़	तू	तू चाहे

और जब मूसा (अ) लौटा अपनी क़ौम की तरफ़ गुस्से में भरा हुआ, रंजीदा, उस ने कहा किस क़द्र बुरी मेरी जांनशीनी की तुम ने मेरे बाद! क्या तुम ने अपने परवरदिगार के हुक्म से जल्दी की? और उस (मूसा अ) ने तख़्तियाँ डाल दीं और सर (बालों से) पकड़ा अपने भाई का और उसे अपनी तरफ़ खींचने लगा, वह (हारून अ) बोला ऐ मेरे माँ जाए! लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे क़त्ल कर डाले, पस मुझ पर दुश्मनों को ख़ुश न कर और मुझे ज़ालिम लोगों के साथ शामिल न कर। (150)

उस ने (मूसा अ) ने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रहमत में दाख़िल कर, और तू सब से ज़ियादा रहम करने वाला है। (151)

बेशक जिन लोगों ने बछड़े को (माबूद) बना लिया, अनक़रीब उन्हें उन के रब का ग़ज़ब पहुँचेगा और ज़िल्लत दुनिया की ज़िन्दगी में, और इसी तरह हम बुहतान बान्धने वालों को सज़ा देते हैं। (152)

और जिन लोगों ने बुरे अमल किए फिर उस के बाद तौबा की और वह ईमान ले आए, बेशक तुम्हारा रब उस (तौबा) के बाद बख़्शने वाला, मेहरबान है। (153)

और जब मूसा (अ) का ग़ुस्सा फ़रू हुआ, उस ने तख़्तियों को उठा लिया, और उन की तहरीर में हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं। (154)

और मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से हमारे वादे के लिए सत्तर (70) आदमी चुन लिए, फिर जब उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया, उस ने कहा ऐ मेरे रब! तू अगर चाहता तो इस से पहले इन्हें और मुझे हलाक कर देता, क्या तू हमें उस पर हलाक कर देगा जो हम में से बेवकूफ़ों ने किया! यह नहीं मगर (सिर्फ़) तेरी आज़माइश है, तू उस से जिस को चाहे गुमराह करे और तू जिस को चाहे हिदायत दे, तू हमारा कारसाज़ है, सो हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा और तू बहतरीन बख़्शने वाला है। (155)

وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا

बेशक हम	और आख़िरत में	भलाई	दुनिया	इस	में	हमारे लिए	और लिख दे

هُدْنَآ اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ

और मेरी रहमत	मैं चाहूँ	जिस	उस को	मैं पहुँचाता हूँ (दूँ)	अपना अ़ज़ाब	उस ने फ़रमाया	तेरी तरफ़	हम ने रुजूअ़ किया

وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ

और देते हैं	डरते हैं	उन के लिए जो	सो मैं अ़नक़रीब वह लिख दूँगा	हर शै	वसीअ़ है

الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٦﴾ اَلَّذِيْنَ

वह लोग जो	156	ईमान रखते हैं	हमारी आयात पर	वह	और वह जो	ज़कात

يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا

लिखा हुआ	उसे पाते हैं	वह जो-जिस	उम्मी	नबी	रसूल	पैरवी करते हैं

عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ۡ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ

भलाई	वह हुक्म देता है उन्हें	और इंजील	तौरेत	में	अपने पास

وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ

उन पर	और हराम करता है	पाकीज़ा चीज़ें	उन के लिए	और हलाल करता है	बुराई	से	और रोकता है उन्हें

الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ

थे	जो	और तौक़	उन के बोझ	उन से	और उतारता है	नापाक चीज़ें

عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ

और उस की मदद की	और उस की रफ़ाक़त (हिमायत) की	ईमान लाए उस पर	पस जो लोग	उन पर

١٩ ع ٦ ٩ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٥٧﴾

157	फ़लाह पाने वाले	वह	वही लोग	उस के साथ	उतारा गया	जो	नूर	और पैरवी की

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا

सब	तुम्हारी तरफ़	अल्लाह का रसूल	बेशक मैं	लोगो	ऐ	कह दे

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ

ज़िन्दा करता है	वह	मगर	माबूद	नहीं	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बादशाहत	उस की	वह जो

وَيُمِيْتُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ

वह जो	उम्मी	नबी	और उस का रसूल	अल्लाह पर	सो तुम ईमान लाओ	और मारता है

يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٨﴾

158	हिदायत पाओ	ताकि तुम	और उस की पैरवी करो	और उस के सब कलाम	अल्लाह पर	ईमान रखता है

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٩﴾

159	इन्साफ़ करते हैं	और उस के मुताबिक़	हक़ की	हिदायत देता है	एक गिरोह	क़ौमे मूसा	और से (में)

और हमारे लिए इस दुनिया में और आख़िरत में भलाई लिख दे, बेशक हम ने तेरी तरफ़ रुजूअ़ किया, उस ने फ़रमाया मैं अपना अ़ज़ाब जिस को चाहूँ दूँ, और मेरी रहमत हर शै पर वसीअ़ है, सो मैं वह अ़नक़रीब लिख दूँगा उन के लिए जो डरते हैं और ज़कात देते हैं और हमारी आयात पर ईमान रखते हैं। (156)

वह लोग जो पैरवी करते हैं (हमारे) रसूल (मुहम्मद स) नबी उम्मी की, जिसे वह लिखा हुआ पाते हैं अपने पास तौरेत में और इंजील में, वह उन्हें हुक्म देता है भलाई का और उन्हें रोकता है बुराई से, और उन के लिए हलाल करता है पाकीज़ा चीज़ें और उन पर हराम करता है नापाक चीज़ें, और उतारता है उन (के सरों) से बोझ और (उन की गर्दनों से) तौक़ जो उन पर थे, पस जो लोग उस पर ईमान लाए और उन्हों ने उस की हिमायत की और उस की मदद की और उस नूर की पैरवी की जो उस के साथ उतारा गया है, वही फ़लाह पाने वाले हैं। (157)

आप कह दें, ऐ लोगो! बेशक मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, वह जिस की बादशाहत है आस्मानों पर और ज़मीन में, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दा करता है और मारता है, सो तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल नबी उम्मी (मुहम्मद स) पर, वह जो ईमान रखता है अल्लाह पर और उस के सब कलामों पर, और उस की पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ। (158)

और मूसा (अ) की क़ौम में एक गिरोह है जो हक़ की हिदायत देता है और वह उसी के मुताबिक़ इन्साफ़ करते हैं, (159)

और हम ने उन्हें जुदा कर दिया (तक़्सीम कर दिया) बारह क़बीले (गिरोह गिरोह की सूरत में) और जब उस की क़ौम ने उस से पानी मांगा, हम ने मूसा की तरफ़ वहि भेजी कि मारो अपनी लाठी उस पत्थर पर, तो उस से बारह चश्मे फूट निकले, हर शख़्स ने पहचान लिया अपना घाट, और हम ने उन पर अब्र का साया किया और उन पर मन्न (एक क़िस्म का गोंद) और सलवा (बटेर जैसा परिन्दा) उतारा, तुम खाओ पाकीज़ा चीज़ें में से जो हम ने तुम्हें दीं और उन्हों ने हमारा कुछ न बिगाड़ा लेकिन वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। **(160)**

और जब उन से कहा गया तुम इस शहर में रहो और इस से खाओ जैसे तुम चाहो और “हित्ततुन” (बख़्श दे) कहो और दरवाज़े (में) सिज्दा करते हुए दाख़िल हो, हम तुम्हें तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे, हम अनक़रीब नेकी करने वालों को ज़ियादा देंगे। **(161)**

पस बदल डाला उन में से ज़ालिमों ने उस के सिवा लफ़्ज़ जो उन्हें कहा गया था, सो हम ने उन पर अज़ाब भेजा आस्मान से क्योंकि वह ज़ुल्म करते थे। **(162)**

और उन से उस बस्ती के बारे में पूछो जो दर्या के किनारे पर थी, जब वह “सब्त” (हफ़्ता) के हुक्म के बारे में हद से बढ़ने लगे, उन के सब्त (हफ़्ते) के दिन मछलियां उन के सामने आजातीं और जिस दिन “सब्त” न होता न आतीं, इसी तरह हम उन्हें आज़माते क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। **(163)**

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَیْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَاَوْحَیْنَآ اِلٰی

तरफ़	और वहि भेजी हम ने	गिरोह गिरोह	बाप दादा की औलाद (क़बीले)	बारह (12)	और हम ने जुदा कर दिया उन्हें

مُوْسٰۤی اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗۤ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ

पत्थर	अपनी लाठी	मारो	कि	उसकी क़ौम	उस ने पानी मांगा	जब	मूसा

فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَیْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ

शख़्स	हर	जान लिया (पहचान लिया)	चश्मे	बारह (12)	उस से	तो फूट निकले

مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَیْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَیْهِمُ

उन पर	और हम ने उतारा	अब्र	उन पर	और हम ने साया किया	अपना घाट

الْمَنَّ وَالسَّلْوٰی ؕ كُلُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ

जो हम ने तुम्हें दीं	पाकीज़ा	से	तुम खाओ	और सलवा	मन्न

وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ یَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ وَاِذْ قِیْلَ

कहा गया	और जब	160	ज़ुल्म करते	अपनी जानों पर	वह थे	और लेकिन	और हमारा कुछ न बिगाड़ा उन्हों ने

لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْیَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَیْثُ

जैसे	इस से	और खाओ	शहर	इस	तुम रहो	उन से

شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ

हम बख़्श देंगे तुम्हें	सिजदा करते हुए	दरवाज़ा	और दाख़िल हो	हित्ता (बख़्श दे)	और कहो	तुम चाहो

خَطِیْٓـٰٔتِكُمْ ؕ سَنَزِیْدُ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۶۱﴾ فَبَدَّلَ الَّذِیْنَ

वह जिन्हों ने	पस बदल डाला	161	नेकी करने वाले	अनक़रीब हम ज़ियादा देंगे	तुम्हारी ख़ताएं

ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَیْرَ الَّذِیْ قِیْلَ لَهُمْ

उन्हें	कहा गया	वह जो	सिवा	लफ़्ज़	उन से	ज़ुल्म किया (ज़ालिम)

فَاَرْسَلْنَا عَلَیْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا

क्योंकि	आस्मान	से	अज़ाब	उन पर	सो हम ने भेजा

كَانُوْا یَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۲﴾ وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْیَةِ الَّتِیْ كَانَتْ ع ٢٠ ٥ ١٠

थी	वह जो कि	बस्ती	से (बारे में)	और पूछो उन से	162	वह ज़ुल्म करते थे

حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ یَعْدُوْنَ فِی السَّبْتِ اِذْ تَاْتِیْهِمْ وقف لازم

उन के सामने आजातीं	जब	हफ़्ते में	हद से बढ़ने लगे	जब	दर्या	सामने (किनारे)

حِیْتَانُهُمْ یَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّیَوْمَ لَا یَسْبِتُوْنَ ۙ

सब्त न होता	और जिस दिन	खुल्लम खुल्ला (सामने)	उन का सब्त	दिन	मछलियां उन की

لَا تَاْتِیْهِمْ ۚ كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا یَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۳﴾ النصف معانقة ٦ عند المتأخرين ١٢

163	वह नाफ़रमानी करते थे	क्योंकि	हम उन्हें आज़माते थे	इसी तरह	वह न आती थीं

وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ

या	उन्हें हलाक करने वाला	अल्लाह	ऐसी क़ौम	क्यों नसीहत करते हो	उन में से	एक गिरोह	कहा	और जब

مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ

और शायद कि वह	तुम्हारा रब	तरफ़	माज़िरत	वह बोले	सख़्त	अज़ाब	उन्हें अज़ाब देने वाला

يَتَّقُوْنَ ﴿١٦٤﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ

मना करते थे	वह जो कि	हम ने बचा लिया	उन्हें समझाई गई थी	जो	वह भूल गए	फिर जब	164	डरें

عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَـِٕيْسٍۢ بِمَا

क्योंकि	बुरा	अज़ाब में	ज़ुल्म किया	वह लोग जिन्हों ने	और हम ने पकड़ लिया	बुराई से

كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٥﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا

उन को हो जाओ	हम ने हुक्म दिया	उस से	जिस से मना किए गए थे	से	सरकशी करने लगे	फिर जब	165	नाफ़रमानी करते थे

قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿١٦٦﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى

तक	उन पर	अलबत्ता ज़रूर भेजता रहेगा	तुम्हारा रब	ख़बर दी	और जब	166	ज़लील ओ ख़ार	बन्दर

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	बेशक	बुरा अज़ाब	तक्लीफ़ दे उन्हें	जो	रोज़े क़ियामत

لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٧﴾ وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ

गिरोह दर गिरोह	ज़मीन में	और परागन्दा कर दिया हम ने उन्हें	167	मेहरबान	बख़्शने वाला	और बेशक वह	जल्द अज़ाब देने वाला

مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ

अच्छाइयों में	और आज़माया हम ने उन्हें	उस	सिवा	और उन से	नेकोकार	उन से

وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٨﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا

वह वारिस हुए	नाख़लफ़	उन के बाद	पीछे आए	168	रुजूअ करें	ताकि वह	और बुराइयों में

الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ

अब हमें बख़्श दिया जाएगा	और कहते हैं	इस अदना ज़िन्दगी	मताअ़ (असबाब)	वह लेते हैं	किताब

وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ

अ़हद	उन पर (उन से)	क्या नहीं लिया गया	उस को ले लें	उस जैसा	माल ओ असबाब	आए उन के पास	और अगर

الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ

और घर	जो उस में	और उन्हों ने पढ़ा	सच	मगर	अल्लाह पर (के बारे में)	वह न कहें	कि	किताब

الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ

मज़बूत पकड़े हुए हैं	और जो लोग	169	क्या तुम समझते नहीं	परहेज़गार	उन के लिए जो	बेहतर	आख़िरत

بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٧٠﴾

170	नेकोकार (जमा)	अजर	ज़ाया नहीं करते	बेशक हम	नमाज़	और क़ाइम रखते हैं	किताब को

और जब उन में से एक गिरोह ने कहा तुम ऐसी क़ौम को क्यों नसीहत करते हो जिसे अल्लाह हलाक करने वाला है या अ़ज़ाब देने वाला है सख़्त अ़ज़ाब, वह बोले तुम्हारे रब के पास माज़िरत पेश करने के लिए और (इस उम्मीद पर) कि शायद वह डरें। (164)

फिर जब वह भूल गए जो उन्हें समझाई गई थी, जो बुराई से रोकते थे हम ने उन्हें बचा लिया, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया हम ने उन्हें बुरे अ़ज़ाब में पकड़ लिया क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। (165)

फिर जब वह उस से सरकशी करने लगे जिस से मना किए गए थे तो हम ने हुक्म दिया उन को ज़लील ओ ख़ार बन्दर हो जाओ। (166)

और जब तुम्हारे रब ने ख़बर दी कि अलबत्ता वह इन (यहूद) पर ज़रूर भेजता रहेगा रोज़े क़ियामत तक (ऐसे अफ़्राद) जो उन्हें बुरे अ़ज़ाब से तक्लीफ़ दें, बेशक तुम्हारा रब सज़ा देने में तेज़ है, और बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (167)

फिर हम ने उन्हें ज़मीन में परागन्दा कर दिया गिरोह दर गिरोह, उन में से (कुछ) नेकोकार हैं और उन में से (कुछ) उस के सिवा हैं, और हम ने उन्हें आज़माया अच्छाइयों और बुराइयों में ताकि वह रुजूअ़ करें। (168)

पीछे आए उन के बाद नाख़लफ़ जो किताब के वारिस हुए, वह इस अदना ज़िन्दगी का असबाब लेते हैं और कहते हैं अब हमें बख़्श दिया जाएगा, और अगर उन के पास उस जैसा माल ओ असबाब (फिर) आए तो उस को ले लें, क्या नहीं लिया गया उन से अ़हद (जो) किताब (तौरेत) में है कि वह अल्लाह के बारे में न कहें मगर सच और उन्हों ने पढ़ा है जो उस (तौरेत) में है, और आख़िरत का घर बेहतर है उन के लिए जो परहेज़गार हैं, क्या तुम समझते नहीं? (169)

और जो लोग मज़बूत पकड़ते हैं किताब को और नमाज़ क़ाइम करते हैं, बेशक हम नेकोकारों का अजर ज़ाया नहीं करते। (170)

وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ

उन पर	गिरने वाला	कि वह	और उन्हों ने गुमान किया	साइबान	गोया कि वह	उन के ऊपर	पहाड़	उठाया हम ने	और जब

خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧١﴾ ع ٢١ ٩ ١١

171	परहेज़गार बन जाओ	ताकि तुम	जो उस में	और याद करो	मज़बूती से	दिया हम ने तुम्हें	जो	तुम पकड़ो

وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ

उन की औलाद	उन की पुश्त	से	बनी आदम	से (की)	तुम्हारा रब	लिया (निकाली)	और जब

وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰي ۛ شَهِدْنَا ۛ اَنْ معانقة ٧ عند المتأخرين ١٢

कि (कभी)	हम गवाह हैं	हां, क्यों नहीं	वह बोले	तुम्हारा रब	क्या नहीं हूँ मैं	उन की जानें	पर	और गवाह बनाया उन को

تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٧٢﴾ لا اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ

इस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	तुम कहो	या	172	ग़ाफ़िल (जमा)	उस	से	थे	बेशक हम	क़ियामत के दिन	तुम कहो

اَشْرَكَ اٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا

सो क्या तू हमें हलाक करता है	उन के बाद	औलाद	और थे हम	उस से क़ब्ल	हमारे बाप दादा	शिर्क किया

بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿١٧٣﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ

और ताकि वह	आयतें	हम खोल कर बयान करते हैं	और इसी तरह	173	अहले बातिल (ग़लत कार)	किया	उस पर जो

يَرْجِعُوْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ

तो साफ़ निकल गया	हमारी आयतें	हम ने उस को दी	वह जो कि	ख़बर	उन पर (उन्हें)	और पढ़ (सुनाओ)	174	रुजूअ करें

مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾ وَلَوْ شِئْنَا

हम चाहते	और अगर	175	गुमराह (जमा)	से	सो हो गया	शैतान	तो उस के पीछे लगा	उस से

لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ

तो उस का हाल	अपनी ख़ाहिशात	और उस ने पैरवी की	ज़मीन की तरफ़	गिर पड़ा (माइल होगया)	और लेकिन वह	उन के ज़रीए	उसे बुलन्द करते

كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۭ

हांपे	या उसे छोड़ दे	वह हांपे	उस पर	तू हमला करे	अगर	कुत्ता	मानिंद - जैसा

ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ

पस बयान कर दो	हमारी आयात	उन्हों ने झुटलाया	वह जो कि	लोग	मिसाल	यह

الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٧٦﴾ سَاۗءَ مَثَلَاۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ

वह जो	लोग	मिसाल	बुरी	176	ग़ौर करें	ताकि वह	अहवाल (क़िस्से)

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٧٧﴾ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ

अल्लाह हिदायत दे	जो - जिस	177	ज़ुल्म करते	वह थे	और अपनी जानें	हमारी आयात	उन्हों ने झुटलाया

فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٧٨﴾

178	घाटा पाने वाले	वह	सो वही लोग	गुमराह कर दे	और जिस	हिदायत याफ़्ता	तो वही

और (याद करो) जब हम ने उठाया पहाड़ उन के ऊपर गोया कि वह साइबान है और उन्हों ने गुमान किया गोया कि वह उन के ऊपर गिरने वाला है, जो हम ने तुम्हें दिया है वह मज़बूती से पकड़ो और जो उस में है याद करो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। (171)

और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने निकाली आदम की पुश्त से उन की औलाद, और उन्हें उन की जानों पर (उन पर) गवाह बनाया, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? वह बोले क्यों नहीं! हम गवाह हैं, कभी तुम क़ियामत के दिन कहो बेशक हम इस से ग़ाफ़िल (बेख़बर) थे। (172)

या तुम कहो शिर्क तो इस से क़ब्ल हमारे बाप दादा ने किया और उन के बाद हम (उन की) औलाद हुए, सो क्या तू हमें हलाक करता है उस पर जो ग़लत कारों ने किया। (173)

और इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं ताकि वह रुजूअ करें (लौट आएं)। (174)

और उन्हें उस शख़्स की ख़बर सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं तो वह उस से साफ़ निकल गया तो शैतान उस के पीछे लग गया, सो वह हो गया गुमराहों में से। (175)

और अगर हम चाहते तो उसे उन (आयतों) के ज़रीए बुलन्द करते, लेकिन वह ज़मीन की तरफ़ माइल हो गया, और उस ने पैरवी की अपनी ख़ाहिशात की, तो उस का हाल कुत्ते जैसा है, अगर तू उस पर हमला करे तो हांपे या उसे छोड़ दे तो (फिर भी) हांपे, यह मिसाल उन लोगों की है जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया, सो (यह) अहवाल बयान कर दो ताकि वह ग़ौर करें। (176)

बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (177)

अल्लाह जिस को हिदायत दे वही हिदायत याफ़्ता है, और जिस को गुमराह कर दे सो वही लोग घाटा पाने वाले हैं। (178)

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ

दिल	उन के	और इन्सान	जिन	से	बहुत से	जहन्नम के लिए	और हम ने पैदा किए

لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ

नहीं सुनते	कान	और उन के लिए	उन से	नहीं देखते	आँखें	और उन के लिए	उन से	समझते नहीं

بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٧٩﴾

179	ग़ाफ़िल (जमा)	वह	यही लोग	बदतरीन गुमराह	वह	बल्कि	चौपायों के मानिंद	यही लोग	उन से

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ

कज रवी करते हैं	वह लोग जो	और छोड़ दो	उन से	पस उस को पुकारो	अच्छे	और अल्लाह के लिए नाम (जमा)

فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ

एक उम्मत (गिरोह)	हम ने पैदा किया	और से- जो	180	वह करते थे	जो	अ़नक़रीब वह बदला पाएंगे	उस के नाम	में

ع ٢٢ ١٠ ١٢ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٨١﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

हमारी आयात को	उन्हों ने झुटलाया	और वह लोग जो	181	फ़ैसला करते हैं	और उस के मुताबिक़	हक़ के साथ (ठीक)	वह बतलाते हैं

سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٢﴾ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ

मेरी खुफ़िया तदबीर	बेशक	उन के लिए	और मैं ढील दूँगा	182	वह न जानेंगे (ख़बर न होगी)	इस तरह	आहिस्ता आहिस्ता उन को पकड़ेंगे

مَتِيْنٌ ﴿١٨٣﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۜ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ

डराने वाले	मगर	वह	नहीं	जुनून	से	नहीं उन के साहिब को	क्या वह ग़ौर नहीं करते	183	पुख़्ता

مُّبِيْنٌ ﴿١٨٤﴾ اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ

पैदा किया	और जो	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बादशाहत	में	क्या वह नहीं देखते	184	साफ़

اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ

तो किस	उनकी अजल (मौत)	क़रीब आगई हो	हो	कि	शायद	और यह कि	कोई चीज़	अल्लाह

حَدِيْثٍۭ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٥﴾ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ؕ

उस को	हिदायत देने वाला	तो नहीं	गुमराह करे अल्लाह	जिस	185	वह ईमान लाएंगे	इस के बाद	बात

وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٨٦﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ؕ

उस का क़ाइम होना	कब है	घड़ी (क़ियामत)	से (बारे में)	वह आप (स) से पूछते हैं	186	बहकते हैं	उन की सरकशी	में	वह छोड़ देता है उन्हें

وقف لازم قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ؔؕ ثَقُلَتْ

भारी है	वह (अल्लाह)	सिवा	उस के वक़्त पर	उस को ज़ाहिर न करेगा	मेरा रब	पास	उस का इल्म	सिर्फ़	कह दें

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ

मुतलाशी	गोया कि आप	आप (स) से पूछते हैं	अचानक	मगर	आएगी तुम पर	न	और ज़मीन	आस्मानों	में

عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٧﴾

187	नहीं जानते	लोग	अक्सर	और लेकिन	अल्लाह के पास	उस का इल्म	सिर्फ़	कह दें	उस के

और हम ने जहन्नम के लिए बहुत से जिन और इन्सान पैदा किए, उन के दिल हैं उन से समझते नहीं, और उन की आँखें हैं उन से वह देखते नहीं, और उन के कान हैं वह सुनते नहीं उन से, यही लोग चौपायों की मानिंद हैं बल्कि (उन से भी) बदतरीन गुमराह हैं, यही लोग ग़ाफ़िल हैं। (179)
और अल्लाह के लिए हैं अच्छे नाम, सो तुम उस को उन (ही) से पुकारो, और उन लोगों को छोड़ दो जो उस के नामों में कज रवी करते हैं, जो वह करते थे अ़नक़रीब वह उस का बदला पाएंगे। (180)
और जो लोग हम ने पैदा किए (उन में) एक गिरोह है जो ठीक राह बतलाते हैं और उस के मुताबिक़ फ़ैसला करते हैं। (181)
और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया, आहिस्ता आहिस्ता हम उन को पकड़ेंगे कि उन्हें ख़बर भी न होगी। (182)
और मैं उन के लिए ढील दूँगा, बेशक मेरी ख़ुफ़िया तदबीर पुख़्ता है। (183)
क्या वह ग़ौर नहीं करते? कि उन के साहिब (मुहम्मद स) को कुछ जुनून नहीं, वह नहीं मगर साफ़ साफ़ डराने वाले। (184)
क्या वह नहीं देखते? बादशाहत आस्मानों और ज़मीन की और जो अल्लाह ने कोई चीज़ (भी) पैदा की है, और यह कि शायद क़रीब आगई हो उन की अजल (मौत की घड़ी), तो इस के बाद किस बात पर वह ईमान लाएंगे? (185)
जिस को अल्लाह गुमराह करे तो कोई हिदायत देने वाला नहीं उस को। और वह उन्हें उन की सरकशी में बहकते छोड़ देता है। (186)
वह आप (स) से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि कब है उस के क़ाइम होने (का वक़्त)? आप (स) कह दें उस का इल्म सिर्फ़ मेरे रब के पास है, उस को उस के वक़्त पर अल्लाह के सिवा कोई ज़ाहिर न करेगा। भारी है आस्मानों और ज़मीन में, और तुम पर न आएगी (वाक़े होगी) मगर अचानक, आप (स) से (यूँ) पूछते हैं गोया कि आप (स) उस के मुतलाशी हैं, आप (स) कह दें: इस का इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (187)

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ وَلَوْ

और अगर	अल्लाह चाहे	जो	मगर	नुक़्सान	और न	नफ़ा	अपनी ज़ात के लिए	मैं मालिक नहीं	कह दें

كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۚ وَمَا مَسَّنِيَ

पहुँचती मुझे	और न	बहुत भलाई	से	मैं अलबत्ता जमा कर लेता	ग़ैब	जानता	मैं होता

السُّوْۗءُ ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ١٨٨ ع هُوَ الَّذِيْ

ع ٢٣ معانقة ٨ عند المتأخرين ١٢

जो- जिस	वह	188	ईमान रखते हैं	लोगों के लिए	और खुशख़बरी सुनाने वाला	डराने वाला	मगर (सिर्फ़)	मैं	बस (फ़क़त)	कोई बुराई

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ

उस की तरफ़ (पास)	ताकि वह सुकून हासिल करे	उस का जोड़ा	उस से	और बनाया	एक	जान	से	पैदा किया तुम्हें

فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ

बोझल हो गई	फिर जब	उस के साथ (उसको)	फिर वह लिए फिरी	हलका सा	हमल	उसे हमल रहा	मर्द ने उस को ढांप लिया	फिर जब

دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ١٨٩

189	शुक्र करने वाले	से	हम ज़रूर होंगे	सालेह	तू ने हमें दिया	अगर	दोनों का (अपना) रब	दोनों ने पुकारा अल्लाह को

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَاۗءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ

सो अल्लाह बरतर	उन्हें दिया	उस में जो	शरीक	उस के	उन दोनों ने ठहराए	सालेह बच्चा	उस ने दिया उन्हें	फिर जब

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ١٩٠ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـــًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ١٩١ ۚ

191	पैदा किए जाते हैं	और वह	कुछ भी	नहीं पैदा करते	जो	क्या वह शरीक ठहराते हैं	190	वह शरीक करते हैं	उस से जो

وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ١٩٢ وَاِنْ

और अगर	192	मदद करते हैं	खुद अपनी	और न	मदद	उन की	वह कुदरत नहीं रखते

تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ۭ سَوَاۗءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ

ख़्वाह तुम उन्हें बुलाओ	तुम पर (तुम्हारे लिए)	बराबर	न पैरवी करें तुम्हारी	हिदायत	तरफ़	तुम उन्हें बुलाओ

اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ١٩٣ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

सिवाए अल्लाह	से	तुम पुकारते हो	वह जिन्हें	बेशक	193	ख़ामोश रहो	या तुम

عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	अगर	तुम्हें	फिर चाहिए कि वह जवाब दें	पस पुकारो उन्हें	तुम्हारे जैसे	बन्दे

صٰدِقِيْنَ ١٩٤ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ۡ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ

वह पकड़ते हैं	उन के हाथ	या	उन से	वह चलते हैं	क्या उन के पाऊँ	194	सच्चे

بِهَآ ۡ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ۡ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ

सुनते हैं	कान	या उन के	उन से	देखते हैं	आँखें	उन की	या	उन से

بِهَا ۭ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَاۗءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ١٩٥

195	पस न दो मुझे मोहलत	मुझ पर दाओ चलो	फिर	अपने शरीक	पुकारो	कह दें	उन से

आप (स) कह दें: मैं मालिक नहीं अपनी ज़ात के लिए नफ़ा का न नुक़्सान का मगर जो अल्लाह चाहे, और अगर मैं ग़ैब जानता होता तो मैं बहुत भलाई जमा कर लेता, और मुझे कोई बुराई न पहुँचती, मैं बस डराने वाला ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूँ उन लोगों के लिए (जो) ईमान रखते हैं। **(188)**

वही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया, उस से बनाया उस का जोड़ा ताकि उस के पास सुकून हासिल करे, फिर जब मर्द ने उसे ढांप लिया तो उसे हलका सा हमल रहा, फिर वह उस को लिए फिरी, फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने अपने रब अल्लाह को पुकारा, अगर तू ने हमें सालेह बच्चा दिया तो हम ज़रूर तेरे शुक्र करने वालों में से होंगे। **(189)**

फिर जब अल्लाह ने उन्हें सालेह बच्चा दिया तो जो अल्लाह ने उन्हें दिया था उन्हों ने उस में शरीक ठहराए, सो अल्लाह उस से बरतर है जो वह शरीक ठहराते हैं। **(190)**

क्या वह उन्हें शरीक ठहराते हैं जो कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह पैदा किए जाते हैं (ख़ालिक़ नहीं, मख़्लूक़ हैं)। **(191)**

और वह उन की मदद की क़ुदरत नहीं रखते और न ख़ुद अपनी मदद कर सकते हैं। **(192)**

और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो वह तुम्हारी पैरवी न करें, तुम्हारे लिए बराबर है ख़्वाह तुम उन्हें बुलाओ या ख़ामोश रहो। **(193)**

बेशक तुम जिन्हें पुकारते हो अल्लाह के सिवा, वह तुम्हारे जैसे बन्दे हैं, फिर उन्हें पुकारो तो चाहिए था कि वह तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो। **(194)**

क्या उन के पाऊँ हैं जिन से वह चलते हैं, या उन के हाथ हैं जिन से वह पकड़ते हैं, या उन की आँखें हैं जिन से वह देखते हैं, या उन के कान हैं जिन से वह सुनते हैं, कह दें, पुकारो अपने शरीकों को, फिर मुझ पर दाओ चलो, पस मुझे मोहलत न दो। **(195)**

اِنَّ وَلِـيِّۦَ اللّٰهُ الَّـذِىْ نَـزَّلَ الْـكِـتٰـبَ ۖ وَهُـوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩٦﴾

196	नेक बन्दे	हिमायत करता है	और वह	किताब	नाज़िल कि	वह जिस	अल्लाह	मेरा कारसाज़	बेशक

وَالَّـذِيْـنَ تَـدْعُـوْنَ مِـنْ دُوْنِـهٖ لَا يَـسْـتَـطِـيْـعُـوْنَ نَـصْـرَكُـمْ وَلَآ

और न	तुम्हारी मदद	कुदरत रखते वह	नहीं	उस के सिवा	पुकारते हैं	और जो लोग

اَنْفُسَهُمْ يَـنْـصُـرُوْنَ ﴿١٩٧﴾ وَاِنْ تَـدْعُـوْهُـمْ اِلَـى الْـهُـدٰى لَا يَـسْمَعُوْا ۖ

न सुनें वह	हिदायत	तरफ़	तुम पुकारो उन्हें	और अगर	197	वह मदद करें	खुद अपनी

وَتَـرٰىـهُـمْ يَـنْـظُـرُوْنَ اِلَـيْـكَ وَهُـمْ لَا يُـبْـصِـرُوْنَ ﴿١٩٨﴾ خُـذِ الْعَفْوَ وَاْمُـرْ

और हुक्म दें	दरगुज़र	पकड़ें (करें)	198	नहीं देखते हैं	हालांकि	तेरी तरफ़	वह तकते हैं	और तू उन्हें देखता है

بِـالْـعُـرْفِ وَاَعْـرِضْ عَـنِ الْـجٰـهِـلِـيْـنَ ﴿١٩٩﴾ وَاِمَّـا يَـنْـزَغَـنَّـكَ مِـنَ

से	तुझे उभारे	और अगर	199	जाहिल (जमा)	से	और मुँह फेर लें	भलाई का

الشَّيْطٰنِ نَـزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِـاللّٰهِ ۖ اِنَّـهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٠٠﴾ اِنَّ الَّـذِيْـنَ

जो लोग	बेशक	200	जानने वाला	सुनने वाला	बेशक वह	अल्लाह की	तो पनाह में आजा	कोई छेड़	शैतान

اتَّـقَـوْا اِذَا مَـسَّـهُـمْ طٰٓـىِٕـفٌ مِّـنَ الشَّـيْـطٰنِ تَـذَكَّـرُوْا فَـاِذَا هُـمْ

वह	तो फ़ौरन	वह याद करते हैं	शैतान	से	कोई गुज़रने वाला (वस्वसा)	उन्हें छूता है (पहुँचता है)	जब	डरते हैं

مُّبْصِرُوْنَ ﴿٢٠١﴾ ج وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِى الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾

202	वह कमी नहीं करते	फिर	गुमराही	में	वह उन्हें खींचते हैं	और उन के भाई	201	देख लेते हैं

وَاِذَا لَـمْ تَـاْتِـهِـمْ بِـاٰيَـةٍ قَـالُـوْا لَـوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۖ قُـلْ اِنَّـمَـآ اَتَّـبِـعُ

मैं पैरवी करता हूँ	सिर्फ़	कह दें	उसे घड़ लिया	क्यों नहीं	कहते हैं	कोई आयत	तुम न लाओ उन के पास	और जब

مَـا يُـوْحٰـى اِلَـيَّ مِـنْ رَّبِّـىْ ۚ هٰـذَا بَـصَـآىِٕـرُ مِـنْ رَّبِّـكُـمْ وَهُـدًى

और हिदायत	तुम्हारा रब	से	सूझ की बातें	यह	मेरा रब	से	मेरी तरफ़	जो वहि की जाती है

وَّرَحْـمَـةٌ لِّـقَـوْمٍ يُّـؤْمِـنُـوْنَ ﴿٢٠٣﴾ وَاِذَا قُـرِئَ الْـقُـرْاٰنُ فَـاسْـتَـمِـعُـوْا

तो सुनो	कुरआन	पढ़ा जाए	और जब	203	ईमान रखते हैं	लोगों के लिए	और रहमत

لَـهٗ وَاَنْـصِـتُـوْا لَعَلَّـكُـمْ تُـرْحَـمُـوْنَ ﴿٢٠٤﴾ وَاذْكُـرْ رَّبَّـكَ فِـىْ نَفْسِكَ

अपना दिल	में	अपना रब	और याद करो	204	रहम किया जाए	ताकि तुम पर	और चुप रहो	उस को

تَـضَـرُّعًـا وَّخِـيْـفَـةً وَّدُوْنَ الْـجَـهْـرِ مِـنَ الْـقَـوْلِ بِـالْـغُـدُوِّ

सुबह	आवाज़	से	बुलन्द	और बग़ैर	और डरते हुए	आजिज़ी से

وَالْاٰصَـالِ وَلَا تَـكُـنْ مِّـنَ الْـغٰـفِـلِـيْـنَ ﴿٢٠٥﴾ اِنَّ الَّـذِيْـنَ عِـنْـدَ رَبِّـكَ

तेरा रब	नज़्दीक	जो लोग	बेशक	205	बेख़बर (जमा)	से	और न हो	और शाम

لَا يَـسْـتَـكْـبِـرُوْنَ عَـنْ عِـبَـادَتِـهٖ وَيُـسَـبِّـحُـوْنَـهٗ وَلَـهٗ يَـسْـجُـدُوْنَ ۩ ﴿٢٠٦﴾

206	सिजदा करते हैं	और उसी को	और उस की तस्बीह करते हैं	उस की इबादत	से	तकब्बुर नहीं करते

ع ٨ ٢٤ ١٤
السجدة الثالثة

बेशक मेरा कारसाज़ अल्लाह है, जिस ने किताब नाज़िल की और वह नेक बन्दों की हिमायत करता है। (196)

और उस (अल्लाह) के सिवा जिन को तुम पुकारते हो, वह कुदरत नहीं रखते तुम्हारी मदद की और न खुद अपनी मदद ही करने के क़ाबिल हैं। (197)

और अगर तुम उन्हें पुकारो हिदायत की तरफ़ तो वह (कुछ) न सुनें और तू उन्हें देखता है कि वह तेरी तरफ़ तकते हैं हालांकि वह (कुछ) नहीं देखते। (198)

आप (स) दरगुज़र करें और भलाई का हुक्म दें और जाहिलों से मुँह फेर लें। (199)

और अगर तुझे उभारे शैतान की तरफ़ से कोई छेड़ तो अल्लाह की पनाह में आजा, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (200)

बेशक जो लोग (अल्लाह से) डरते हैं जब उन्हें पहुँचता है शैतान (की तरफ़ से) कोई वस्वसा, वह (अल्लाह को) याद करते हैं तो वह फ़ौरन (राहे सवाब) देख लेते हैं। (201)

और उन (शैतानों) के भाई उन्हें गुमराही में खींचते हैं, फिर वह कमी नहीं करते। (202)

और जब तुम उन के पास कोई आयत न लाओ तो वह कहते हैं: तू क्यों नहीं (खुद) घड़ लेता, आप (स) कह दें मैं तो सिर्फ़ उस की पैरवी करता हूँ जो मेरे रब की तरफ़ से मेरी तरफ़ वहि की जाती है, यह (कुरआन) सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से, और हिदायत ओ रहमत उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (203)

और जब कुरआन पढ़ा जाए तो (पूरी तवज्जुह) से सुनो उस को और चुप रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (204)

और अपने रब को याद करो अपने दिल में आजिज़ी से और डरते हुए और बुलन्द आवाज़ के बग़ैर सुबह ओ शाम, और बेख़बरों से न हो। (205)

बेशक जो लोग तेरे रब के नज़्दीक हैं, वह उस की इबादत से तकब्बुर नहीं करते और उस की तस्बीह करते हैं और उसी को सिजदा करते हैं। (206)

آيَاتُهَا ٧٥ ❀ (٨) سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

रुकुआत 10 | (8) सूरतुल अंफ़ाल (ग़नाइम) | आयात 75

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا

पस डरो	और रसूल	अल्लाह के लिए	ग़नीमत	कह दें	ग़नीमत	से (बारे में)	आप (स) से पूछते हैं

اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	अगर	और उस का रसूल	और अल्लाह की इताअ़त करो	आपस में	अपने तईं	और दुरुस्त करो	अल्लाह

مُّؤْمِنِيْنَ ۝١ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ

डर जाएं	ज़िक्र किया जाए अल्लाह का	जब	वह लोग	मोमिन (जमा)	दरहक़ीक़त	1	मोमिन (जमा)

قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا

ईमान	वह ज़ियादा करें	उस की आयात	उन पर	पढ़ी जाएं	और जब	उन के दिल

وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝٢ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا

और उस से जो	नमाज़	क़ाइम करते हैं	वह लोग जो	2	भरोसा करते हैं	और वह अपने रब पर

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ

उन के लिए	सच्चे	मोमिन (जमा)	वह	यही लोग	3	वह ख़र्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया

دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝٤ كَمَاۤ

जैसा कि	4	इज़्ज़त वाला	और रिज़्क़	और बख़्शिश	उन का रब	पास	दरजे

اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

अहले ईमान	से (का)	एक जमाअ़त	और बेशक	हक़ के साथ	आप का घर	से	आप का रब	आप (स) को निकाला

لَكٰرِهُوْنَ ۝٥ يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ

हांके जा रहे हैं	गोया कि वह	वह ज़ाहिर हो चुका	जबकि	बाद	हक़	में	वह आप (स) से झगड़ते थे	5	नाख़ुश

اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝٦ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى

एक का	अल्लाह	तुम्हें वादा देता था	और जब	6	देख रहे हैं	और वह	मौत	तरफ़

الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ

बग़ैर कांटे वाला	कि	और चाहते थे	तुम्हारे लिए	कि वह	दो गिरोह

تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ

जड़	और काट दे	अपने कलिमात से	हक़	साबित कर दे	कि	और चाहता था अल्लाह	तुम्हारे लिए	हो

الْكٰفِرِيْنَ ۝٧ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝٨

8	मुजरिम (जमा)	नापसन्द करें	ख़ाह	बातिल	और बातिल साबित करदे	हक़	ताकि हक़ साबित करदे	7	काफ़िर (जमा)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

आप (स) से ग़नीमत के बारे में पूछते हैं, कह दें ग़नीमत अल्लाह और रसूल (स) के लिए है, पस अल्लाह से डरो और दुरुस्त करो आपस में (तअ़ल्लुक़ात) और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करो अगर तुम मोमिन हो। (1)

दरहक़ीक़त मोमिन वह लोग हैं जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उन के दिल डर जाएं और उन पर (उन के सामने) उस की आयतें पढ़ी जाएं तो वह (आयात) उन का ईमान ज़ियादा करें, और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (2)

वह लोग जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और जो हम ने दिया उस में से ख़र्च करते हैं। (3)

यही लोग सच्चे मोमिन हैं, उन के लिए उन के रब के पास दरजे हैं और बख़्शिश और रिज़्क़ इज़्ज़त वाला। (4)

जैसा कि आप (स) को आप (स) के रब ने आप (स) के घर से हक़ (दुरुस्त तदबीर) के साथ निकाला, और बेशक अहले ईमान की एक जमाअ़त नाख़ुश थी। (5)

वह आप (स) से हक़ के मामले में झगड़ते थे जबकि वह ज़ाहिर हो चुका, गोया कि वह हांके जा रहे हैं मौत की तरफ़, और वह (उसे) देख रहे हैं। (6)

और (याद करो) अल्लाह तुम्हें वादा देता था कि (अबू जहल और अबू सुफ़ियान के) दो गिरोहों में से एक तुम्हारे लिए और तुम चाहते थे कि (जिस में) कांटा न लगे तुम्हारे लिए हो, और अल्लाह चाहता था कि साबित कर दे हक़ अपने कलिमात से, और काफ़िरों की जड़ काट दे। (7)

ताकि हक़ को हक़ साबित कर दे और बातिल को बातिल, ख़ाह मुजरिम नापसन्द करें। (8)

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ

एक हज़ार	मदद करूँगा तुम्हारी	कि मैं	तुम्हारी	तो उस ने क़ुबूल करली	अपना रब	तुम फ़र्याद करते थे	जब

مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ﴿٩﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ

और ताकि मुत्मइन हों	ख़ुशख़बरी	मगर	अल्लाह ने बनाया उसे	और नहीं	9	एक दूसरे के पीछे (लगातार)	फ़रिश्ते	से

بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۭ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ

ग़ालिब	बेशक अल्लाह	अल्लाह के पास	से	मगर	मदद	और नहीं	तुम्हारे दिल	उस से

ع ١ ١٥ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ

तुम पर	और उतारा उस ने	उस से	तस्कीन	ऊँघ	तुम्हें ढांप लिया (तारी कर दी)	जब	10	हिक्मत वाला

مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ

पलीदी (नापाकी)	तुम से	और दूर कर दे	उस से	ताकि पाक कर दे तुम्हें	पानी	आस्मान	से

الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ﴿١١﴾

11	क़दम	उस से	और जमा दे	तुम्हारे दिल	पर	और ताकि बान्ध दे (मज़बूत करदे)	शैतान

اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ

ईमान लाए (मोमिन)	जो लोग	तुम साबित रखो	तुम्हारे साथ	कि मैं	फ़रिश्ते	तरफ़ (को)	तेरा रब	जब वहि भेजी

سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ

ऊपर	सो तुम ज़र्ब लगाओ	रुअ़ब	कुफ़्र किया (काफ़िर)	जिन लोगों ने	दिल (जमा)	में	अ़नक़रीब डाल दूँगा

الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

कि वह	यह इस लिए	12	पूर	हर	उन से (उन की)	और ज़र्ब लगाओ	गर्दनें

شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ

तो बेशक	और उस का रसूल	अल्लाह	मुख़ालिफ़ होगा	और जो	और उस का रसूल	अल्लाह	मुख़ालिफ़ हुए

اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ

काफ़िरों के लिए	और यक़ीनन	पस चखो	तो तुम	13	अ़ज़ाब (मार)	सख़्त	अल्लाह

عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ

उन लोगों से	तुम्हारी मुडभेड़ हो	जब	ईमान लाए	जो लोग	ऐ	14	दोज़ख़	अ़ज़ाब

كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿١٥﴾ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ

उस दिन	उन से फेरे	और जो कोई	15	पीठ (जमा)	तो उन से न फेरो	(मैदाने जंग में) लड़ने को	कुफ़्र किया

دُبُرَهٗٓ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ

पस वह लौटा	अपनी जमाअ़त	तरफ़	या जा मिलने को	जंग के लिए	घात लगाता हुआ	सिवाए	अपनी पीठ

بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦﴾

16	पलटने की जगह (ठिकाना)	और बुरी	जहन्नम	और उस का ठिकाना	अल्लाह	से	ग़ज़ब के साथ

(याद करो) जब तुम अपने रब से फ़र्याद करते थे तो उस ने तुम्हारी (दुआ़) क़ुबूल कर ली कि मैं तुम्हारी मदद करूँगा एक हज़ार लगातार आने वाले फ़रिश्तों से। (9)

और अल्लाह ने उस को नहीं बनाया मगर ख़ुशख़बरी, और ताकि उस से मुत्मइन हों तुम्हारे दिल, और मदद नहीं है मगर अल्लाह के पास से, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (10)

(याद करो) जब उस ने तुम पर ऊँघ तारी कर दी, यह उस (अल्लाह) की तरफ़ से तस्कीन (थी) और तुम पर आस्मान से पानी उतारा ताकि तुम्हें पाक कर दे उस से, और तुम से शैतान की डाली हुई नापाकी दूर कर दे, और ताकि तुम्हारे दिल मज़बूत कर दे, और उस से जमा दे (तुम्हारे) क़दम। (11)

(याद करो) जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों को वहि भेजी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम साबित रखो मोमिनों के (दिल), मैं अ़नक़रीब काफ़िरों के दिलों में रुअ़ब डाल दूँगा, तुम उन की गर्दनों के ऊपर ज़र्ब लगाओ और उन के एक एक पूर पर ज़र्ब लगाओ। (12)

यह इस लिए हुआ कि वह अल्लाह और उस के रसूल के मुख़ालिफ़ हुए और जो अल्लाह और उस के रसूल का मुख़ालिफ़ होगा (वह याद रखे) बेशक अल्लाह की मार सख़्त है। (13)

तो तुम यह चखो और यक़ीनन काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का अ़ज़ाब है। (14)

ऐ ईमान वालो, जब उन से तुम्हारी मुडभेड़ हो जिन्हों ने कुफ़्र किया मैदाने जंग में तो उन से पीठ न फेरो। (15)

और जो कोई उस दिन उन से अपनी पीठ फेरे सिवाए उस के कि घात लगाता हो जंग के लिए या अपनी जमाअ़त की तरफ़ जा मिलने को, पस वह लौटा अल्लाह के ग़ज़ब के साथ और उस का ठिकाना जहन्नम है, और यह बुरा ठिकाना है। (16)

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ

आप ने फेंकी	जब	और आप (स) ने न फेंकी थी	उन्हें क़त्ल किया	अल्लाह	बल्कि	सो तुम ने नहीं क़त्ल किया उन्हें

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	अच्छा	आज़माइश	अपनी तरफ़ से	मोमिन (जमा)	और ताकि आज़माए	फेंकी	अल्लाह	बल्कि

سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٧﴾ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٨﴾ اِنْ

अगर	18	काफ़िर (जमा)	मक्र-दाओ	सुस्त करने वाला	और यह कि अल्लाह	यह तो हुआ	17	जानने वाला	सुनने वाला

تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ

तुम्हारे लिए	बेहतर	तो वह	तुम बाज़ आजाओ	और अगर	फ़ैसला	आगया तुम्हारे पास	तो अलबत्ता	तुम फ़ैसला चाहते हो

وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ

और ख़ाह कसरत हो	कुछ	तुम्हारा जत्था	तुम्हारे	काम आएगा	और हरगिज़ न	हम फिर करेंगे	फिर करोगे	और अगर

وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا ع ٢ ٩ ١٦

हुक्म मानो	ईमान लाए	वह लाग जो	ऐ	19	मोमिन (जमा)	साथ	और बेशक अल्लाह

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا

और न हो जाओ	20	सुनते हो	जबकि तुम	उस से	और मत फिरो	अल्लाह और उस का रसूल

كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢١﴾ ۚ اِنَّ

बेशक	21	वह नहीं सुनते	हालांकि	हम ने सुना	उन्हों ने कहा	उन लोगों की तरह जो

شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ

जो कि	गूंगे	बहरे	अल्लाह के नज़दीक	जानवर (जमा)	बदतरीन

لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۭ وَلَوْ

और अगर	तो ज़रूर सुना देता उन को	कोई भलाई	उन में	जानता अल्लाह	और अगर	22	समझते नहीं

اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا

ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	23	मुँह फेरने वाले	और वह	वह ज़रूर फिर जाएं	उन्हें सुना दे

اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ

उस के लिए जो ज़िन्दगी बख़्शे तुम्हें	वह बुलाएं तुम्हें	जब	और उसके रसूल का	अल्लाह का	क़ुबूल कर लो

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	और यह कि	और उस का दिल	आदमी	दरमियान	हाइल हो जाता है	कि अल्लाह	और जान लो

تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

उन्हों ने ज़ुल्म किया	वह लोग जो	न पहुँचेगा	वह फ़ित्ना	और डरो	24	तुम उठाए जाओगे

مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

25	अज़ाब	शदीद	कि अल्लाह	और जान लो	ख़ास तौर पर	तुम में से

सो तुम ने उन्हें क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें क़त्ल किया, और आप (स) ने (मुटठी भर ख़ाक) नहीं फेंकी जब आप (स) ने फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी, और ताकि मोमिनों को एक बेहतरीन आज़माइश से कामयाबी के साथ गुज़ार दे। बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (17)

यह तो हुआ, और यह कि अल्लाह काफ़िरों का दाओ सुस्त करने वाला है। (18)

(काफ़िरो!) अगर तुम फ़ैसला चाहते हो तो अलबत्ता तुम्हारे पास फ़ैसला (इस्लाम की फ़त्ह की सूरत में) आगया है, और अगर तुम बाज़ आजाओ तो वह तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर फिर (यही) करोगे तो हम (भी) फिर करेंगे और तुम्हारा जत्था हरगिज़ तुम्हारे काम न आएगा ख़ाह उस की कसरत हो और बेशक अल्लाह मोमिनों के साथ है। (19)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म मानो, और उस से न फिरो जबकि तुम सुनते हो। (20)

और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्हों ने कहा हम ने सुना, हालांकि वह सुनते नहीं। (21)

बेशक जानवरों से बदतरीन अल्लाह के नज़दीक (वह हैं जो) बहरे गूंगे हैं, जो समझते नहीं। (22)

और अगर अल्लाह उन में कोई भलाई जानता तो उन्हें ज़रूर सुना देता, और अगर अल्लाह उन्हें सुना दे तो ज़रूर फिर जाएं, और वह मुँह फेरने वाले हैं। (23)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल (की दावत) क़ुबूल करो जब वह तुम्हें उस के लिए बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शे और जान लो कि अल्लाह हाइल हो जाता है आदमी और उस के दिल के दरमियान, और यह कि तुम उसी की तरफ़ (रोज़े हश्र) उठाए जाओगे। (24)

और उस फ़ित्ने से डरो जो न पहुँचेगा तुम में से ख़ास तौर पर उन लोगों को जिन्हों ने ज़ुल्म किया, और जान लो कि अल्लाह शदीद अज़ाब देने वाला है। (25)

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِى الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ

तुम डरते थे	ज़मीन	में	ज़ईफ़ (कमज़ोर) समझे जाते थे	थोड़े	तुम	जब	और याद करो

اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ

और तुम्हें रिज़्क़ दिया	अपनी मदद से	और तुम्हें कुव्वत दी	पस ठिकाना दिया उस ने तुम्हें	लोग	उचक ले जाएं तुम्हें	कि

مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	26	शुक्र गुज़ार हो जाओ	ताकि तुम	पाकीज़ा चीज़ें	से

لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾

27	जानते हो	जब कि तुम	अपनी अमानतें	और न ख़ियानत करो	और रसूल	अल्लाह	ख़ियानत न करो

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ

और यह कि अल्लाह	बड़ी आज़माइश	और तुम्हारी औलाद	तुम्हारे माल	दरहक़ीक़त	और जान लो

ع ٩ ٣ ١٧

عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ

तुम अल्लाह से डरोगे	अगर	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	28	बड़ा	अजर	पास

يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ

और बख़्श देगा तुम्हें	तुम्हारी बुराइयां	तुम से	और दूर कर देगा	फुरक़ान	तुम्हारे लिए	वह बना देगा

وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾ وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कुफ़्र किया (काफ़िर)	वह लोग जिन्हों ने	ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे	और जब	29	बड़ा	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह

لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ۭ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۭ

और ख़ुफ़िया तदबीर करता है अल्लाह	और वह ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे	या निकाल दें तुम्हें	या क़त्ल कर दें तुम्हें	तुम्हें क़ैद कर लें

وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا

वह कहते हैं	हमारी आयात	उन पर	पढ़ी जाती हैं	और जब	30	तदबीर करने वाला	बेहतरीन	और अल्लाह

قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاۗءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ

मगर (सिर्फ़)	यह	नहीं	उस	मिस्ल	कि हम कह लें	अगर हम चाहें	अलबत्ता हम ने सुन लिया

اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا

यह	है	अगर	ऐ अल्लाह	वह कहने लगे	और जब	31	पहले (अगले)	क़िस्से कहानियां

هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاۗءِ

आस्मान	से	पत्थर	हम पर	तो बरसा	तेरी तरफ़	से	हक़	वह

اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ

जबकि आप (स)	कि उन्हें अ़ज़ाब दे	अल्लाह	और नहीं है	32	दर्दनाक	अ़ज़ाब	या ले आ हम पर

فِيْهِمْ ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿٣٣﴾

33	बख़्शिश मांगते हों	जबकि वह	उन्हें अ़ज़ाब देने वाला	अल्लाह	है	और नहीं	उन में

और याद करो जब तुम ज़मीन में थोड़े थे, कमज़ोर समझे जाते थे, तुम डरते थे कि तुम्हें उचक ले जाएंगे लोग, पस उस ने तुम्हें ठिकाना दिया और अपनी मदद से कुव्वत दी और पाकीज़ा चीज़ों से तुम्हें रिज़्क़ दिया ताकि तुम शुक्र गुज़ार हो जाओ। (26)

ऐ ईमान वालो! ख़ियानत न करो अल्लाह की और रसूल (स) की, और ख़ियानत न करो अपनी अमानतों में जब कि तुम जानते हो (दीदा ओ दानिस्ता)। (27)

और जान लो कि दरहक़ीक़त तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद बड़ी आज़माइश हैं, और यह कि अल्लाह के पास बड़ा अजर है। (28)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए बना देगा (हक़ को बातिल से जुदा करने वाला) फुरक़ान और तुम से तुम्हारी बुराइयां दूर कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (29)

और (याद करो) जब काफ़िर आप (स) के बारे में ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे कि आप (स) को क़ैद कर लें या क़त्ल कर दें या (मक्के से) निकाल दें, और वह ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे और अल्लाह (भी) ख़ुफ़िया तदबीर करता है, और अल्लाह बेहतरीन तदबीर करने वाला है। (30)

और जब उन पर पढ़ी जाती हैं हमारी आयात तो वह कहते हैं अलबत्ता हम ने सुन लिया, अगर हम चाहें तो हम भी इस जैसी (आयात) कह लें, यह तो सिर्फ़ क़िस्से कहानियां हैं अगलों की। (31)

और जब वह कहने लगे ऐ अल्लाह! अगर तेरी तरफ़ से यही हक़ है तो बरसा हम पर आस्मान से पत्थर या हम पर दर्दनाक अ़ज़ाब ले आ। (32)

और अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि उन्हें अ़ज़ाब दे जबकि आप (स) उन में हैं, और अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब देने वाला नहीं जबकि वह बख़्शिश मांग रहे हों। (33)

وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

मस्जिदे हराम	से	रोकते हैं	जबकि वह	अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब दे	कि न	उन के लिए (उन में)	और क्या

وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ

मुत्तक़ी (जमा)	मगर (सिर्फ़)	उस के मुतवल्ली	नहीं	उस के मुतवल्ली	वह हैं	और नहीं

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ

उन की नमाज़	थी	और नहीं	34	नहीं जानते	उन में से अक्सर	और लेकिन

عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ

अ़ज़ाब	पस चखो	और तालियां	सीटियां	मगर	ख़ाने कअ़बा	नज़्दीक

بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ

ख़र्च करते हैं	कुफ़्र किया (काफ़िर)	जिन लोगों ने	बेशक	35	तुम कुफ़्र करते थे	उस के बदले जो

اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ

फिर	सो अब ख़र्च करेंगे	रास्ता अल्लाह का	से	ताकि रोकें	अपने माल

تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا

कुफ़्र किया (काफ़िर)	और जिन लोगों ने	वह मग़लूब होंगे	फिर	हस्रत	उन पर	होगा

اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ

पाक	से	गन्दा	ताकि अल्लाह जुदा करदे	36	इकट्ठे किए जाएंगे	जहन्नम	तरफ़

وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا

सब	फिर ढेर कर दे	दूसरे	पर	उस के एक	गन्दा	और रखे

فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ ع ٩ ١٨

उन से जो	कहदें	37	ख़सारा पाने वाले	वह	यही लोग	जहन्नम	में	फिर डाल दे उस को

كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا

फिर वही करें	और अगर	गुज़र चुका	जो	उन्हें	माफ़ कर दिया जाए	वह बाज़ आजाएं	अगर	उन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى

यहां तक कि	और उन से जंग करो	38	पहले लोग	सुन्नत (रविश)	गुज़र चुकी है	तो तहक़ीक़

لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا

वह बाज़ आजाएं	फिर अगर	अल्लाह का	सब	दीन	और हो जाए	कोई फ़ित्ना	न रहे

فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا

तो जान लो	वह मुँह मोड़ लें	और अगर	39	देखने वाला	वह करते हैं	जो वह	तो बेशक अल्लाह

اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٤٠﴾

40	मददगार	और खूब	साथी	खूब	तुम्हारा साथी	कि अल्लाह

और उन में क्या है? कि अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब न दे जबकि वह मस्जिदे हराम से रोकते हैं, और वह नहीं हैं उस के मुतवल्ली। उस के मुतवल्ली तो सिर्फ़ मुत्तक़ी हैं, लेकिन उन में से अक्सर नहीं जानते। (34)

और ख़ाने कअ़बा के नज़्दीक उन की नमाज़ क्या होती है मगर सिर्फ़ सीटियां और तालियां, पस अ़ज़ाब चखो उस के बदले जो तुम कुफ़्र करते थे। (35)

बेशक काफ़िर अपने माल ख़र्च करते हैं ताकि रोकें अल्लाह के रास्ते से, सो अब वह ख़र्च करेंगे, फिर उन पर हस्रत होगी, फिर वह मग़लूब होंगे, और काफ़िर जहन्नम की तरफ़ इकटठे किए जाएंगे। (36)

ताकि अल्लाह गन्दे को पाक से जुदा कर दे और गन्दे को एक दूसरे पर रखे, फिर सब को एक ढेर कर दे, फिर उस को जहन्नम में डाल दे, यही लोग हैं ख़सारा पाने वाले। (37)

काफ़िरों से कह दें अगर वह बाज़ आजाएं तो उन्हें माफ़ कर दिया जाएगा जो गुज़र चुका, और अगर वह फिर वही करें तो तहक़ीक़ पहलों की रविश गुज़र चुकी है। (38)

और उन से जंग करो यहां तक कि कोई फ़ित्ना न रहे और दीन पूरा का पूरा अल्लाह का हो जाए, फिर अगर वह बाज़ आजाएं तो बेशक अल्लाह देखने वाला है जो वह करते हैं। (39)

और अगर वह मुँह मोड़ लें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा साथी है, क्या खूब साथी और क्या खूब मददगार है! (40)